आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज के सान्निध्य में श्री विरागोदय तीर्थक्षेत्र पथरिया में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी दिनांक 12 से 14 सितम्बर 2025

नीति का स्वरूप, भेद और उनसे लाभ – पृच्छना देशना के संदर्भ में

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर

(राष्ट्रपति सम्मानित)

महामंत्री – प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

संयुक्त मंत्री – अखिल भारतवर्षीय दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाना मानव का परम लक्ष्य है। लौकिक और पारलौकिक जीवन को संवारना ही मानवीय जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। मानव चाहता है कि वह जीवन में श्रेष्ठ यश प्राप्त करें और श्रेष्ठ जीवन जीएं। इसके लिए संस्कारों के बीजांकुरण की परम आवश्यकता होती है, जो कि सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक और शिक्षकीय वातावरण से प्राप्त होते हैं। व्यक्ति जीवन को सही दिशा में ले जाने के लिए वस्तुओं को, लोगों को देखता है, सीखता है, अनुशरण करता है और फिर क्रियान्वयन करता है। इसके लिए परम आवश्यक है कि जीवन में उन सब बातों और विषयों को कहा जाए, सुना जाए और जीवन में उतारा जाए जिनसे जीवन श्रेष्ठ बनता है। इसके लिए आचार्यों ने, कवियों ने, लेखकों ने नीति वचनामृत को कहा है। नीतियाँ जीवन में मानवीयता, संवेदनाएं, प्रेम, वात्सल्य, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी, बडप्पन जैसे भावों को प्रकट करती है। कहा गया है –

वसुधैव कुटुम्बकम्।।

वसुधा ही कुटुम्ब है।

शान्तिः परं सुखं।

शांति ही परम सुख है।

दया सर्वभूतेषु।

सभी जीवों पर दया करो।

लोभो नाशाय भवति।

लोभ का परिणाम विनाश होता है।

विवेकविहीनस्य न सिध्यति किञ्चन।

विवेकहीन व्यक्ति कुछ भी सिद्ध नहीं कर सकता।

ये महान् नीतियाँ हैं। ये छोटी-सी सूक्ति महान अर्थ को देने वाली है। व्यक्ति, समाज, राज्य, देश से ऊपर उठकर इन सूक्तियों में नीति कही गयी हैं। वास्तविकता में नीति जीवन को दिशा देती है और दशा बदल देती है। संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भतृर्हरि ने नीतिशतकम् लिखा। आचार्यश्री सोमदेवसूरि द्वारा नीतिवाक्यामृत लिखा गया। श्री अमोघवर्ष द्वारा प्रश्नोत्तर रत्नमालिका का लेखन किया गया। इस प्रश्नोत्तर रत्नमालिका पर पट्टाचार्यश्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज ने पृच्छना देशना नामक टीका का सृजन किया है। जो कि अभूत पूर्व है। यहाँ हम आचार्यश्री द्वारा उपदिष्ट पृच्छना देशना को आधार बनाकर अपने लेख का लेखन कर रहे हैं। प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ईसा की नौंवी शताब्दी में राजर्षिश्री अमोघवर्ष द्वारा संस्कृत भाषा में निबद्ध 29 श्लोक प्रमाण है, जो कि प्रश्न-उत्तर शैली में है। यह संसार का ययार्थबोध कराने वाला नीतिपरक अद्भुत ग्रन्थ है। इसकी प्रश्नोत्तर-रूप शैली बहुत आकर्षक है। यह गृहस्थ, गृहत्यागी, वैरागी एवं वीतरागी बाल-वृद्ध के लिए उपादेय, चिन्तनीय है। ग्रन्थकर्ता ने श्लोकों के माध्यम से स्वयं ही प्रश्न किए और स्वयं उत्तर प्रस्तुत किए। इसमें लगभग 66 प्रश्न व उत्तर हैं, इसलिए इसका नाम 'यथानाम तथागुण' इस नीति के अनुसार **प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका** सुन्दर व सटीक ग्रन्थ है। राजर्षि अमोघवर्ष न देवाधिदेव भगवान् महावीर को नमस्कार करके **प्रश्नोत्तर रत्नमालिका** नामक नीति शिक्षा विषयक ग्रन्थ की रचना की है। आचार्यश्री ने **प्रश्नोत्तर रत्न मालिका** के प्रबोधनार्थ **पृच्छनादेशना** नामक कृति समाज और प्रबुद्धजनों के समक्ष प्रदान कर जन-जन को संसार का स्वरूप एवं शरीर की नश्वरता को बताकर न्याय-नीति की शिक्षा प्रदान की है।

किं संसारे सारं बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव।
मनुजेषु दृष्टतत्त्वं स्वपरहितायोद्यतं जन्म॥6॥

संसार में सार क्या है? बहुत बार भी चिन्तन करते हुए यह ही है कि- मनुष्य जन्म पाकर तत्त्वदर्शी होते हुए स्व-पर हित के लिए उद्यत रहना।

नीति का स्वरूप – नीति शब्द संस्कृत की **नी** धातु से निष्पन्न हुआ है। **नी** धातु **ले जाने** के अर्थ में है। नीति का शाब्दिक विश्लेषण **नीयते अनया इति नीतिः** है। जो सही दिशा में ले चले, अग्रसर करें वह **नीति** है। ले जाना, मार्गदर्शन करना, या निर्देशन करना। नीति का सामान्य अर्थ है – व्यवस्थित, न्यायसंगत और युक्तिपूर्ण आचरण की प्रणाली है। नीति विचारने, निर्णय लेने और उसके सार्थक क्रियान्वयन के लिए कार्य करती है। आचार्य चाणक्य ने चाणक्य नीति में कहा गया है –

नास्ति नीति समो मित्रं, न च चापल्यम् प्रियं।
न च विद्या समं चक्षुः, न च धर्मात् परं सुखम्॥

नीति के समान कोई मित्र नहीं है, चंचलता से बढ़कर कोई शत्रु नहीं है। विद्या के समान चक्षु नहीं है और धर्म से बढ़कर कोई सुख नहीं है। मनुस्मृति में नीति के संबंध में कह गया है –

धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

जो धर्म (नीति) से रहित हैं, वे पशुओं के समान हैं।

हितोपदेश में कहा गया है -

यस्य नास्ति स्वधर्मज्ञा नीतिः सत्यं दया दमः।
न स प्राप्नोति सन्मार्गं लोकयात्रामुपस्थिताम्॥

जिस व्यक्ति में स्वधर्म, **नीति,** सत्य, दया और संयम नहीं है, वह सन्मार्ग को प्राप्त नहीं कर सकता।

नास्ति नीति समं बलं।

नीति से बढ़कर कोई बल नहीं होता।

पंचतंत्र में नीति कही गयी है -

न चोरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

विद्या (नीति सहित ज्ञान) ऐसा धन है जिसे न चोर चुरा सकते हैं, न राजा छीन सकता है। यह भाईयों में बाँटा नहीं जा सकता और भार भी नहीं बनता। खर्च करने से यह बढ़ता है – यह सभी प्रकार के धन में श्रेष्ठ है।

नीति वह दीपक है जो अंधकार हरता,
पथभ्रष्ट को फिर से राह पर धरता।
जिसके जीवन में नीति का हो निवास,
वहीं पाता है सच्चा विकास।

नीति के संबंध में और भी कहा गया है -

नीतिर्यस्यास्ति न स पथभ्रष्टो भवेत् क्वचित्।
नीतिहीनस्य जीवित्वं मृत्युतुल्यं हि मानव॥

जिसके पास **नीति** है, वह कभी रास्ता नहीं भूलता। नीति से रहित जीवन, मृत्यु के समान है।

चाणक्य नीति में कहा गया है -

संपत्तिः सत्वशीलस्य, सत्संगस्य च संग्रहः।

सदाचारविनीतस्य, नीतिज्ञस्य च वन्दिता॥

संपत्ति उसी की होती है जो सच्चरित्र, सत्संगप्रिय, सदाचारी और **नीति** को जानने वाला होता है।

नीति के भेद – नीति के भेद के विषय में अनेक आचार्यों के विभिन्न मत हैं। आचार्य चाणक्य ने नीति के चार भेद कहे हैं –

सामदामदण्डभेदाः स्वामिनः प्राणसंश्रयाः।

न कदाचिद्विवर्ज्याः स्युस्तेषां कार्येषु सिद्धयः॥

साम, दाम, दण्ड, भेद – ये शासक के चार मुख्य उपाय हैं। इनका प्रयोग कार्य सिद्ध करने के लिए हमेशा आवश्यक है।

न चतुर्भिः उपायैः विना कार्यसिद्धिः। चाणक्य नीति

इन चार उपायों के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता।

महाभारत के उद्योग पर्व में नीति के चार भेद कहे गए हैं। इसमें नामों की भिन्नता है। दण्ड के स्थान पर सान्त्वना की बात कही गयी है।

सामदानेन सान्त्वेन च भेदेन च शत्रवः।

हन्यते दण्डमात्रेण न कश्चन कदाचन॥

केवल दण्ड (बल प्रयोग) से शत्रु पर विजय नहीं पाई जा सकती। विजय प्राप्त करने के लिए साम, दान, सान्त्वन (समझौता), और भेद – इन सबका प्रयोग आवश्यक होता है।

पंचतंत्र में मित्रभेद के अन्तर्गत पाँच प्रकार के नीति के भेद कहें हैं। इन भेदों में क्षमा को भी स म्मिलित किया गया है।

साम दानं क्षमा दण्डो भेदश्चेति निपातनाः।

कार्यसिद्धिप्रवृत्तानां नीतिः संज्ञा प्रवर्तते॥

साम, दान, क्षमा, दण्ड और भेद – ये सब नीति कहलाते हैं। इनका उपयोग कार्य सिद्धि के लिए किया जाता है।

हितोपदेश में भी पांच भेद कहे गए हैं -

सामदामभयं दण्डं भेदं चैव प्रपद्यते।

उपायाः पञ्च ये प्रोक्ता मन्त्रिणा साधयेत् कृतम्॥

साम, दाम, भय, दण्ड और भेद – ये पाँच उपाय हैं। बुद्धिमान व्यक्ति इनका प्रयोग करके कार्य की सिद्धि करता है।

न यत्र सामं न दानं न दण्डो

न चापि भेदाः प्रयुज्यन्ते चतुर्णाम्।

तत्र कार्यं न सिद्ध्येत् प्रयासात्
पुनःपुनः चिन्त्यं तदेव॥

जहाँ न साम, न दाम, न दण्ड और न भेद – इनमें से कोई उपाय काम करता है, वहाँ प्रयास करने पर भी कार्य सिद्ध नहीं होता। ऐसे में पुनः विचार करना ही उचित होता है।

यहाँ हम देखते हैं कि आचार्यों ने नीतियों के भेद के संबंध में विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं। आचार्य चाणक्य के अनुसार चार नीतियाँ हैं – साम, दाम, दण्ड और भेद। आचार्यश्री सोमदेव सूरि ने नीतिवाक्यामृत में भी साम, दान, दण्ड और भेद ये चार नीतियाँ कही हैं। महाभारत में साम, दान, सान्त्वना और भेद इन चार नीतियाँ की बात है। पंचतत्र में साम, दान, क्षमा, दण्ड और भेद ये पांच नीतियाँ कही है। वहीं हितोपदेश में पांच नीतियाँ कही है साम, दाम, भय, दण्ड और भेद।

साम, दाम, दंड, भेद नीति है जो किसी व्यक्ति या शत्रु को अपने वश में करने या अपनी बात मनवाने के लिए अपनाई जाने वाली चार रणनीतियों का समूह है: साम (मधुर वचन और कूटनीति), दाम (धन या उपहार), दंड (सजा या बल प्रयोग), और भेद (फूट डालना या विभाजन पैदा करना)। इन नीति का प्रयोग शत्रु को शांत करने, नियंत्रित करने या अपना काम निकलवाने के लिए किया जाता है, जिसमें सबसे पहले सौहार्दपूर्ण तरीके अपनाए जाते हैं और यदि वे विफल हों तो अन्य उपायों का प्रयोग किया जाता है।

साम (सौहार्द) - यह पहला चरण है, जिसमें मधुर वचन, समझौता, बातचीत और आपसी समझ से दूसरों को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया जाता है।

दाम (धन/उपहार) - यदि साम काम न करे, तो धन, उपहार, रिश्वत या किसी प्रकार के प्रलोभन के माध्यम से किसी व्यक्ति को खरीदना या अपने पक्ष में करना।

भेद (फूट डालना)- यदि धन से भी बात न बने, तो लोगों या समूहों के बीच मतभेद पैदा करना, फूट डालना या उनकी जासूसी करके उन्हें कमजोर बनाना।

दंड (सजा) - यह सबसे अंतिम उपाय है, जिसमें बल प्रयोग, सजा देना, शारीरिक रूप से प्रताड़ित करना, या आक्रमण करके शत्रु को वश में किया जाता है।

आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज अपना आध्यात्मिक चिंतन देते हुए कहते हैं - भव्य बन्धुओ! मुनिप्रवर अमोघवर्ष ग्रंथराज प्रश्नोत्तर रत्नमालिका में वस्तु तत्त्व की

प्ररूपणा करते हुए समझा रहे हैं। मुमुक्षुओ! **'कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा नो समर्प्यते जातु**। कितने ही संकट के दिन आ जायें, विपत्ति का काल आ जाये, प्राण कंठ में आ जायें, पर किसी पुरुष को अपने को समर्पित नहीं करना चाहिए। बहुत गंभीर प्रश्न है, प्राण कंठगत होने पर भी अपनेआपको समर्पित नहीं करना चाहिए। ज्ञानी! आपको लोग प्रमाणित मानते हैं। अपने आप को प्रमाणित करने

की दृष्टि से, अपनी बात को आपके मुख से कहलवाना चाहते हो, हे मित्र! उसे आप कहिए। अर्थ से, भेद से, बंध से, समधी से, साम-दाम-दंड भेद चारों विद्या खेल रहा है। आपको समझ मेंआ रहा है। समता से आप मेरे साथ हो,मेरी बात को स्वीकार करो। बेटा! अपना समर्थन हर पुरुष को नहीं देना चाहिए। लोभ देता है, आप भूमि ले लो, पैसे ले लो, धन, स्त्री, जो कुछ चाहिए ले लो, पर आप मेरी बात का समर्थन करो। जब दाम से नहीं मानता है, तो आपको दण्डित करनेखड़ा हो जाता है, प्रताड़ित करता है। आपके बीच में भेद डालना चाहता है कि स्वीकार करो मुझे। पर यहाँ रुक जाइये। प्राण-प्रियता नहीं है, धन-प्रियता नहीं, कुटुम्बजन-प्रियता नहीं है, शरीर के प्रताड़ित होने से डर नहीं, एक शब्द आपसे बोल गया और आप प्रमाणित पुरुष हो, इतिहास लिखा जाएगा कि इन्होंने इस बात को स्वीकार किया है। आप नहीं बचोगे, जिसने आपसे स्वीकार कराया वो नहीं बचेगा, इतिहास बचा रहेगा और मित्र! सहस्त्रों-सहस्त्रों सदियों तक आपके द्वारा मिथ्यात्व की पुष्टि होगी।

प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका। 543। पृच्छना-देशना

नीति से लाभ -

व्यक्ति में चरित्र निर्माण और नैतिकता का विकास होता है।

समाज में सद्भावना, सहयोग, और पारस्परिक विश्वास को बढ़ावा मिलता है।

संकट एवं विषम परिस्थितियों में सही निर्णय लेने और सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है।

जीवन में सफलता, व्यवहारिकता और आदर्शवादिता आती है।

नीति मानव जीवन में सही मार्गदर्शन, भावनात्मक विकास और सामाजिक समरसता के लिए अत्यन्त लाभकारी हैं।

आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज नीति के लाभ बताते हुए कहते हैं - सत्य, शील आदि पुण्य पदों को नीति-विषयक शिक्षा प्रदान करने के लिए इस ग्रन्थ में इच्छाओ पर नियन्त्रण और पुण्य के बढ़ाने की प्रशस्त प्रेरणा है। आचार्य श्री कहते हैं– हे मित्र! अपने स्वार्थों के पीछे कभी देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अशुभ चिन्तन मत कर लेना। इच्छाएँ अपनी असीम हो सकती हैं, आकांक्षाएँ आपकी असीम हो सकती हैं, पर असीम आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं हो सकती है। इच्छाओं की पूर्ति इच्छाओं से नहीं होती है। इच्छाओं की पूर्ति पुण्य से होती है। पुण्य पास नहीं है और इच्छाएँ अनन्त हैं तो संक्लेशता ही मिलेगी। इच्छाएँ कम होना चाहिए, पुण्य बड़ा होना चाहिए। अगर पुण्य छोटा है और इच्छाएँ अधिक हैं, तो उनकी पूर्ति न होने पर संक्लेशता होगी तो नवीन कर्म का बन्ध होगा।

नीतिकार नवीन कर्मों के बन्ध से बचने के लिए आत्म-स्वरूप में रमण होने की शिक्षा देतेहैं। संसार और शरीर से विरक्त रहने की शिक्षा देतेहैं। "पृच्छना-देशना" में यही शिक्षा प्रदान की गई है। सत्संगति की प्रेरणा दी है। संसार असार है; इसमेंकुछ भी सार नहीं है। जैसे केले का वृक्ष होता है, उसके तने के पत्ते निकालते जाओ, उसमें कुछ भी सारभूत नहीं बचता है, उसी प्रकार संसार में कुछ भी सार नहीं है। सब नश्वर है, क्षणिक है। दया, करुणा, नम्रता आदि की मैत्री महत्त्वपूर्ण होती है जैसा कि मूल ग्रन्थकार न लिखा है–

काहर्निशमनुचिन्त्या संसारासारता न च प्रमदा।

का प्रेयसी विधेया करुणादाक्षिण्यमपि मैत्री॥19/प्र.र.॥

रात-दिन क्या चिन्तन करना चाहिए? इसका उत्तर देते हुए कहा गया है कि- संसार की असारता का चिन्तन करना चाहिए, न कि प्रमदा का चिन्तन करना चाहिए। प्रेमिका तो करुणा, नम्रता और मैत्री भाव को बनाना चाहिए। संसार की असारता को समझाते हुए देशनाकार ने "जगत्काय स्वभावौ संवेग वैराग्यार्थं" की सम्यक् व्याख्या की है। संसार और शरीर का स्वरूप ही भयभीत करता है। संसारी सम्बन्धियों का सम्बन्ध राग बढ़ाता है; जो दुःख का कारण होता है, अतः सुख-शान्ति को प्राप्त करने के लिए आत्म-स्वरूप का चिन्तन ही आवश्यक है।

धर्म नीति की व्याख्या को आचार्य श्री ने स्पष्ट करतेहुए कहा है– **"कस्माद् भयमिह"** संसार में भय किससे हैऔर कौन-सा है ? भय संज्ञा इस जीव को प्रचण्ड रूप से सताती है। भय एक बहुत बड़ा अपराध है। भय एक बहुत बड़ा अपशब्द है। प्रचण्ड पाप का कारण बनता है। भीरुपना कभी भी श्रेष्ठ कार्य नहीं करने देता। भीरु पुरुष विश्वास का पात्र नहीं हो सकता। वीर वही हैजो शत्रुओं केबीच खड़ा होकर कभी भयभीत नहीं होता।

भैया! सूरजमुखी-पुष्प बनकर जीवन जियो। सूर्य जैसे-जैसे घूमता है वैसे-वैसे सूर्यमुखी पुष्प घूमता जाता है। समाज में आनंद और शांति तब ही होती है जब समाज दिगम्बर-गुरुओं की सेवा भक्ति में तल्लीन रहती है। परस्पर में जीवन ऐसे जियो कि समाज की एकता/अखण्डता नष्ट न हो। छोटे की बात भी सुनी जावे और बड़ों का भी आदर हो। भैया! रीति-नीति का परिचय होना चाहिए। यदि रीति-नीति का ज्ञान नहीं होगा, तो परिवार व समाज की एकता संभव नहीं है।

- जीवन भी जियो तो नीति के साथ जियो।
- जिसकेपास नीति और पुण्य हैउसेकोई पराजित नहीं कर सकता है।

'नीतिवाक्यामृतं' ग्रन्थ में लिखते हैं कि सारे ग्रन्थ की विभूतियाँ एक किनारे हैं, पर पण्डित शब्द लग जाये, यह पूर्व का पुण्य होता है। हर व्यक्ति को 'पण्डित' शब्द नहीं मिलता। बेटा! जिनवाणी दान दी होगी, उस पुण्य का नियोग है। एक बीस-पच्चीस साल के युवा को अस्सी साल का वृद्ध भी सम्मान की दृष्टि से देखता है। हे विद्वानो! जब-जब तुम्हें तिलक लगे, जब-जब तुम्हारे माथे पर तिलक लगाये कोई समाज का आदमी, तो वो तिलक अपने माथे पर अपना सम्मान मत मान लेना, ये भगवती जिनवाणी का सम्मान है। ये छोटे-छोटे मुनि बैठे हैं। ज्ञानी! आपको एक छोटे-से बालक से लेकर अस्सी साल का वृद्ध भी नमस्कार कर रहा है, ये शरीर की वंदना नहीं है, ये तीर्थंकर अरहंत की मुद्रा की वंदना है।

जीवन में प्रत्येक युवा विद्यार्थी को 'कुरल-काव्य' नाम के नीति ग्रंथ का स्वाध्याय करना चाहिए। एलाचार्य स्वामी ने लिखा है कि जीवन मेंउत्साह एक महान् शक्ति है। 80,90 साल के बुजुर्ग को सम्मेदशिखर की वंदना कराने में कोई समर्थवान होता है वो डंडी नहीं होती है, पालकी नहीं होती है, मित्र! यदि कोई होती है वस्तु, उसका नाम है उत्साह शक्ति। माताओ! यदि आपको अपने पति व बेटों को पागल न करना हो, तो भोजन अच्छा बनाना सीख लो और जिनको घर में लड़ाई न कराना हो। आप विश्वास मानो, भोजन में वो ताकत होती है कि तुम्हारे घर में कोई झगड़ा नहीं हो सकता, ईमानदारी से बोल रहा हूँ।

ज्ञानी! कः जागर्ति? जाग्रत पुरुष कौन है? वे ही जाग्रत हैं जो विवेकी हैं। जो जाग्रत है, वो विवेकी है। जो विवेक खो गए हैं, वे सब सो रहे हैं। हे मित्र! ये नीति का सूत्र है।

ध्यान रखना, जिनके पुण्य छोटे हैं उन्हें संपत्ति मत पकड़ा देना। जिनके पुण्य बढ़ जायें तो संपत्ति दे देना, वे रक्षा करेंगे ये नीति है।

सुख-दुःख आदि सम्पूर्ण स्तरों में जीवन जीना, उसका नाम नीति है। अपने सुख के सामने दूसरे के दुःख का ध्यान न रखना इसका नाम है **कुनीति।**

नीतियों का ज्ञान करना चाहिए, पर सुनीति के साथ।

"जीके राज्य में रहियो वा की वैसी कहियो, ऊँट बिलाइआ ले गई हाँजू- हाँजू कहियो" ये नीति महापुरुषों की नहीं होती, ये नीति साधु पुरुषों की नहीं होती। ये नीति उन लोगों की होती है जिनको जीने से मतलब है, इन्हें सत्य से कोई मतलब नहीं। जिसको आप बोलते हो देहाती भाषा-में चापलूस लोगों की नीति। देश से निकल जाना श्रेष्ठ है, राज्य से निकल जाना श्रेष्ठ है, पर सम्राट् को

असम्यक् उपदेश श्रेष्ठ नहीं है। अशुभ बोलना श्रेष्ठ नहीं है। ठीक है, आप मुझे नहीं मानोगे, कोई दिक्कत नहीं। चाणक्य चोटी खोल सकता है, लेकिन गलत का साथ नहीं दे सकता।

कस्य वशे प्राणिगणः सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।

क्व स्थातव्यं न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाय॥23॥

अहो आत्मन्! हमेशा-नैतिकता पूर्ण जीवन जीना ही श्रेष्ठ है, न्याय-नीति ही हितकारी है, जो नरोत्तम सत्य और प्रिय वचन बोलते हैं, विनयवंत होते हैं उनके वश में विश्व के सभी प्राणी हो जाते हैं।